

# હિંદી શિક્ષાવલી ભા. ૧ ના અર્થ અને સરખમો

ઝપાવી પ્રાસિદ્ધ કર્તા  
મોહનલાલ સી. યાસિક  
દહેગામ. (અ. પી. રેલ્વે)

વિ. સં. ૧૯૮૭ : છ. સ. ૧૯૭૧  
આવૃત્તિ ૧ લી. : પ્રત ૨૦૦૦

“ડાયમંડ ન્યુબિલી” પ્રિન્ટીંગ પ્રેસમાં પરિષદ-દેવીદાસ  
છબનલાલે છાપી. સેક્યુરિટીસ રોડ, અમદાવાદ.

કિં. ૦-૩-૦

# ગુજરાત વિદ્યાપીઠ ગ્રંથાલય

[ ગુજરાતી કૉપીરાયિટ વિભાગ ]

અનુક્રમાંક ૧૫૮૨ ૩

વર્ગીક

પુસ્તકનું નામ રિન્ટ શિશુવાળી - ૧

વિષય મ ૧૨૨ : ૮૪૩ : ૬૩૨૨ : ૨૧૫

# हिंदी शिक्षावली

## भा. १ ना अर्थ.

पाठ १

सबरे-सबारे  
उठते ही-उठतां  
माता-मा  
झूठ-झुठ  
सब-सब  
देखता है-देखे छे  
कुछ-कुछ  
नहीं है-छे नहि-नथी  
करने-करवा  
बह ते  
किये-किया  
संसार में-संसारमां  
अपने-पैताना  
ही-ही  
सोंपा जाय-सोंपाय  
सबसे-सायाधरी

और-अने  
इम्बर का-धियरनुं  
पिता की-पितानी  
मत-मा  
कामों को-कामों  
उससे-तेथी, तेनाथी  
छिपा-छुपुं  
जो-जो  
लगे-लागे  
बिना-विना  
विद्या के-विद्याना  
को-ने  
केवल-केवल  
तुम्हें-तमने  
उसे-तेने

## पाठ २

किसीसे-डाँधी  
 जिस-ने  
 जल्द-जल्दी  
 रक्खो-राभे।  
 लडकोको-छेकराओने  
 सी-नेवी  
 बुरे-नहारां  
 ठहरता-हरतुं, टकतुं  
 कुदता है-पणे छे  
 हानि-नुकसान  
 उनका-तेभने।

झगडा-तकरार  
 होता है-थाय छे  
 मिट जाता है-नाश पावे छे  
 बदन-शरीर  
 प्यार-वहास  
 जान-जुव  
 कमाया हुआ-कमाओखुं  
 वूसरोको-भीनओने  
 आदमीयो-भाषुसे।  
 इस लिये-अे भाटे  
 कभी-कही

## पाठ ३

उसको-तेने  
 औरों को-भीनओने  
 कहनेसे-कडेवाथी  
 सच्चा-साथे।  
 चाहिये-लोहअे  
 पढे लिखे-लखेसा भखेसा  
 मनुष्योंको-भाषुसेने  
 देता-आपतुं  
 देर-वार

घोखा-दगे।  
 बात-वात  
 भरोसा-विश्वास  
 वही-तेन  
 जगह-जग्या।  
 आदर-मान  
 मिलता है-भणे छे  
 अच्छे-सारां  
 कौन-कौणु

जाने-जधे  
तुमसे-तभाराथी  
या-अथवा  
और-भीनुं

फिर-दूरी, पक्षी  
हो सके-थई सके  
बातें-वातो  
साथ-साथे

पाठ ४

माबाप ने-माप्पापे  
कितने-डेदसां  
सौचकर-विचारीने  
भला-साई  
उनसे-तेओथी  
आपसमें-भांडोभांडे  
भी-पथु  
धूपमें-तापमां  
तुरंत-तरत  
जब-ज्बारे  
तब-त्बारे  
बुझाओ-बुझावे।  
देख भालकर-जेध जलवीने  
कि-डे  
गिर पड़ो-पड़ी जओ।  
तले-तणे, नीचे  
आया-आओ

तुम्हारे लिखे-तभारे भाटे  
यह ओ  
उनको-तेभनी  
चाहनेवाला-चाहनार  
बढ़कर-बधीने  
क्यों कि-डेभडे  
जो-जुव  
बाहर-ज्बारे  
पानी-पाणी  
ठंडे-ठंडा  
प्यास-तरस  
राहमें-रस्तामां  
पेसा-जेवुं  
जा कर-जाधने  
पैर-पग  
काट काय-करडीपाय  
कह डालनेमें-कही नापवाभां

બહી-મેરી  
 નિકાલો-કાઠો  
 ફસકા-એનો  
 વ્યા-શી, શું  
 ગાલી-ગાળ  
 કોસો-ગાઉ

મુંદ-મેં  
 અચ્છી તરહસે-સારી રીતે  
 અંત-છેડો, પરિણામ  
 હોગા-હરો  
 ભૂલકર-ભૂલીને  
 ભાગતે હૈ-નાસે છે

પાઠ ૫

ચાહતા હૈ-આહે છે  
 દેહ-શરીર  
 પસીના-પરસેવો  
 બંદ-બંધ  
 મંદ-ધીમી  
 સતાને-સતાવા  
 ઉઝલે-ઉઝળાં  
 પહિને-પહેર્યા

મૈલે કુચૈલે-મેલા મંદા  
 ધિનાતે હૈં-ધિકારે છે  
 નિકલના-નીકળવો  
 આલસી-આળસુ  
 દરિદ્ર-ગરીબાઈ  
 લગતા હૈ-લાગે છે  
 કપડે-કપડાં

પાઠ ૬

વર-ભરે  
 મક્લી-માખી  
 મુશકો-મને  
 મિસને-મેચે  
 વઘાઈ હૈ-બનાવી છે

શહદ-મધ  
 પૂછા-પૂછ્યું  
 તુમ્હેં-તમને  
 કે લિયે-ને માટે  
 કિયા જાતા હૈ-કરાય છે

પહના-બધુનું  
વૈસા-તેવું  
કમ-એધું  
પીછે-પછી  
વાન-ટેવ

જહાં-જ્યાં  
બીમારિયા-રોગ  
તિપાઈ-ત્રિપાધ  
ઘડો-પડા  
છેદ-કાપું  
તીસરેમેં-ત્રીજામાં  
ફન-એ  
છનકર-મળાને  
ગિરતેર-પડતાં-પડતાં  
બીમેં-બીજે

હૈસી-હાંસી  
વેર-વેર  
મૂલ-મૂળ  
હોન-હોઠ  
ગિના ગાતા હૈ-ગણાય છે.

બૈસા-બેઠું  
બહુત-બહુ  
બઢતી હૈ-વધે છે  
લોતે-મુત્તા  
ઢાલેં-પાડે

પાઠ ૭

તક-મુધી  
ઔટામેસે-ઉકાળવાથી  
તીન-ત્રણ  
પેંદી-તળીઉં  
કંકઢ-કાંકર  
ચાલુ-રેતી  
તીનો-ત્રણે  
ચરસાત-ચરસાદ  
કઈ-કેટલીક  
મહીદુઈ ચર્ક-મળેભો ૫૨૪

પાઠ ૮

ઠકા-મરકરી  
હસીમેં-એમાંજ  
ચઢાઈ-ઝોટાઈ  
કરેમેં-કરશે  
ક લાતા હૈ-કહેવાય છે.

पाठ ८

बार-बार  
 पोछा-किया-पुं० पकड़ी  
 पेड़-आउ  
 बबडाकर-गलराधने  
 बरली यरी लीधां  
 सब-सायुं

कुत्तोंने-कुतराओओ  
 भाग कर-नासीने  
 आठमें-ओथाभां  
 पत्तियां-पांछां  
 दुट पड़े-तूटी पड्यां  
 दुर्गत-नहारी दशा

पाठ १०

बरगद--पड  
 डालोंमें--डाणीओभां  
 लटकती हैं--धटके छे  
 धरती--नभीन  
 भीतर--अंदर  
 जम जाती है--योटी लय छे  
 बडा-भोटुं  
 भडोंच-लश्य

अनोखा-लुद्धं  
 जटायें--नटाओ।  
 वे-तेओ।  
 पहुंच जाती है पडोंथी लय छे  
 धंस कर--धसीने  
 जड़ें-भूण  
 छायादार--छायडावाणुं  
 इतना--ओटभे

पाठ ११

दिन--दिवस  
 के मारे--ने लीधे  
 छोटा नानुं  
 थोडा-थोड़

कौआ-डागडा  
 पास-पासे  
 था--हनुं  
 दोब--थांय



कहँ--क्या  
ककड़ी--कांड़ी  
मिहमत--भडेनत

अंतमें--छेवटे  
अ्यों २--जेम जेम  
अकारब--नकाभी

पाठ १२

जीना--अवुं  
काटे--काभा, गाभा  
चेर लेता है--धेरी से छे,  
बंधा--आधेधुं.  
जम जाती है--जमी जय छे  
कामकाजी--छोछी  
फटकने देता करवा देतो।

भारी--भारे  
तरहरके--मतमतना  
बहता--वडेधुं  
काई--धीक्ष  
यही--जेन  
बेरी--वेरी

पाठ १३

ताल--तणाव  
खेल रहेये--रमता हता  
धबडाये--मभराया  
पाँव--पग  
हम--अमे  
जिमसे--जेमनायी  
फुटते हैं--फूटे छे

मैंढक--देडकां  
बरसाने--वरसाववा  
सिर--मायुं  
निहाणेका कर--करगरीने  
खेल--रमत  
खेलें--रमे

पाठ १४

बड़ों का--मोटाओनुं  
ठीक--अराअर

पाठशाला--निशाण  
बहाना--अदाधुं

गलियोंमें--गलीओमां  
छेड़ता है--छेड़ छे  
पढ़ाते हैं--अध्यावे छे  
मानना--मानवुं

बनाता है--बनावे छे  
आप--पोते  
सोचता--विचारते।  
प्रसन्न--भुक्षी

--या० १५

संतान--छोकरां  
पिया है--पीधुं छे  
लड़ना--लड़वुं  
एक-दूसरेकी--ओक ओकनी  
बर्साव-वर्तन  
मित्र-नित्य  
बेटोंको--छोकराओने  
खनकी--गुनरनी  
जांच-अनमायश  
मुठ्ठेने-डोसाओ  
मिले जुले-दुष्प्रभाषने  
हो जाओगे-थध नशे।

उन्होंने--तेभु  
मेल-भेज, भंध  
उनकी--तेभनी  
पढ़े--सर्वो--पाठोशोओ  
वे--तेओ  
समझता था--समझीवतो इतो  
इकट्ठा--ओकठ।  
अंटी--आंटी  
अलग-भुदो  
इसी तरह--ओररीते  
सकेगा-शकरो  
जो-जो

--या० १६

लालची--लालचु  
थी-इती  
अंदा-अंड़  
मैं-हू

मुर्गी-भरधी  
लोतिका-सोनानुं  
सोचा-विश्रु  
फाट डालें-हाडी नभु

मुझे-मने  
ठाम कर-बिचारीने, ठरावीने  
जा रहा था-भूतो हूँ।  
छीन लूँ-छीनवी लड़  
पछता कर-परताछीने  
लालचियोंकी-भालभुओनी

बिचारी-बिचारी  
रोटी-रोटी  
परछाई-पडछाये।  
बह गया पड़ी गये।  
दुकहा-कडे।

पाठ १७

लडकों-छोकराओ।  
बिचलै-बेथी  
बाहेंने-बाहरी  
दौलत-पैसे।  
उताजीने-परतारी।  
बिच-भन

समय-वधत  
तुमको-तमने  
आदर-भान  
जीते-छुपतां  
लीकने-शीपवामां  
लगाओ-धगाडे।

पाठ १८

अस्वाध-मिदल  
चुरा ले जाते हैं-बेरी-बड  
नाथ छे-  
पर-पथ  
बाँट लेते हैं-बडेथी से छे।  
हिचल-भान  
बिचल-भान  
क्यों-भन

घट जाता है-पटी भन छे  
बडती-वधती  
उतना-तेदुध  
बिचल-बेदुध  
उसीके-तेना  
जवाबी-छुपानी  
पामो-भेजने।  
बुढापेमें-परपथमां

## पाठ १६

का रहा का-भातो हतो  
 लोमड़ी-भोंकड़ी  
 होकर-थधने  
 कहा-कहुं  
 सुहावना-सोहाभधुं  
 होती-होत  
 सुनकर-सांभलीने  
 सुनाने को-सांभलाववाने  
 खोलते ही-छिडाउतां  
 गति-दश।

इतने में-ओटलाभां  
 उधर-पां  
 ओर-तरु  
 पर-पांभो  
 जान पड़ता है-जथाय छे  
 गा सकते-भाई शकत  
 हुआ-थये।  
 काब काब-डा : डा  
 लम्बी हुई-आभी मर्छ

## पाठ २०

किसान-पेहुत  
 ये-हता  
 खेत में-पेतर्भां  
 खोदकर-पेदीने  
 सारा-आधुं  
 को दिया-वावी दीधुं  
 बरसा-वरसुं  
 चाई-स्वाइ रस

बिलाडी-रभतिभाण  
 बुलाये-पेसाव्या  
 गडा है-हाटये छे  
 बाद-गधी  
 गहराई-डंअध  
 सुदा ही का-पेसाधुं न हसुं  
 अच्छी-सारी  
 हरसाल-हर वरसे

## पाठ २१

|                   |                        |
|-------------------|------------------------|
| बर्-भभरे।         | पूछा-पूछुं             |
| शहद-भध            | मुझको-भने              |
| मक्खी-भाभी        | तुम्हें-तभने           |
| पालते हैं-पाणे छे | उजाडते हैं-डिगड करे छे |
| मेरे-भारा         | तरह-पेठे               |
| लगाकर-धमाडीने     |                        |

## पाठ २२

|                             |               |
|-----------------------------|---------------|
| अनादर-अपमान                 | प्यारे-प्यारा |
| कहीं-कथांके                 | पाओगे-भेजवरो  |
| छिपाने के लिये-छुपावने भाटे | सबको-साथाने   |
| लैंकडों-सेंकेडे।            | करेंगे-करे    |
| बचने के लिये-बचवाने भाटे    |               |

## पाठ २३

|                |                        |
|----------------|------------------------|
| पीछा-पीणे।     | बकती-बाकती             |
| लोहेका-लोहाने। | इसलिये-अेन भाटे        |
| काका-काणे।     | ब. तावतल-भला प्रमाणमां |
| मीका-आसमानी    | हरियाली-धीमेतरी        |
| हरा-धीमे।      | कैसी-केवी              |
| कोह-मेझी       | मिलनेसे-भगवाधी         |
| आंखें-आंखे।    | बैजनी-रींअुआ, नमंअुआ   |

पाठ २४

लिया सीन्हा  
जिहकी पारी  
खंडुंखंड  
आवत टेव  
जैसी नेवी

सुई सोय  
बुभा दी धोन्नी दीधी  
राह रस्तो  
सारे जधां

पाठ २५

बाना पोरक  
अच्छी तरह सारी पेठे  
पबता है पने छे  
दोनों जन्ने  
जैसे जेम

बुबला दुपणे  
बीमार भांहा  
बैलेही तेमन्  
डटकर ह्यावीने

पाठ २६

हमारे आपणा  
किये हैं ध्यां छे  
मिह्री भाटी  
उसने तेछे  
उपबता डियतुं  
दम दम, भास  
बुटने लगता है धुंटाया मडि छे

जी सकता छी सकतुं  
पकते पाकतां  
हमें आपणने  
दिये हैं आप्पा छे  
जान सकते हैं आपणा  
समने जेम

पृष्ठ २७

निहारे निहारे नीकनवाथी  
इसी ओं  
सोचमें विचारमां  
आयु आवरहा  
बच्चों ही में छोकरांभां  
पाते हैं पाते छे  
अधिक बधारे

नरमी नमता  
दुलार साठ  
तरफदार पक्षपात  
पहिले पहेलां  
बालबलन बालबलमत  
सा नेवे  
सिखाते हैं शीखवे छे

पृष्ठ २८

कंगाल गरीब  
सुशील सुशील  
किसीने डाँढे

तेरे तारा  
मेरे भारा  
कहाँ क्यां

पृष्ठ २९

छोहारे भुजुरी  
लंबा लांछु  
सिरे घर भयागे  
छतरी छत्री  
कैक साखी है बिभा  
बसका भेनु  
पेड़ा पंछ

अरब अरबस्तान  
सुबाकर सुबानि  
फलोंको इनेने  
पीसकर धुनेने  
बुकनी धुई  
बोलकर धोखने  
पिखाते हैं पाय छे

बीस बीस  
गुच्छे गुच्छा, गुमभां  
तोलमें वजनभां

गुठली हीसे  
मेढीको घेताने

पाठ ३०

पहाड पहाड, पर्वत  
झरने झरनां  
निकास निकास  
इन्हींसे अभ्यास  
चोटियां शिपरे।

ढकी ढांढसी  
सर्दी ठंडी  
बर्दा त्पां  
लकड़ी लाकड़ां

पाठ ३१

निकलते ही नीकलतां, बिगलतां  
सारी अधी  
धरती नमीन  
अंधेरेका अंधारानुं  
उजाला अन्यानुं  
नाज अनान  
पकाता हू पकने छे  
किरनें किरने।

हावनां सोदाभणी  
कैसा डेवुं  
भांति भांति की मत मतनी  
चमक तेन  
तारे तारा  
छिप जाते है छुपाध अन्या  
बही तेन  
सुमा करते है रयां करे



## પાઠ ૩૨

જાંચ તપાસ, પરીક્ષા  
ઠહરા ઈયું  
બટોહી મુસાફર  
બલી બળવાન  
વેગસે ગતિથી

ઝયોં ઝયોં જેમ જેમ  
ત્યોં ત્યોં તેમ તેમ  
લપેટતા લપેટતો  
ફેલાયા ફેલાવ્યું  
મોગ મથા બીમધ ગયો

## પાઠ ૩૩

સાંપ સાપ  
વઢા મયાનક બચ્ચા જુવ કર  
વહુધા બહું ખરૂં  
પુરાને ભુના  
કઢહરોં ખડેરો  
ઝોલ્લોં મેં બખોભોમાં  
ઝાદેમેં શિઆળામાં  
ચિલ્લોં કર  
હુલે પેઠેલા  
ગરામેં મેં કિનાળામાં  
ઝોલ ઝાળ  
ઝાદેમેં ઝાડીઓમાં

ઝીવસે વચ્ચેથી  
તાલ તાળવું  
ચેલિયાં ઢાથળીઓ  
ચિવ ઝેર  
કાદા હુઝા કરડેભો  
વહકતે હુષ બળતા  
ઝલા દે બાળી દે-  
કાદકર કાપીને  
નિકાલ દે ઢાડી નાખે  
ઝની ઝનનાં  
કેંચુકી કાંચળી

प्रा० ३४

मछली भाछली

मंझोले छिंथी

पैदा पैदा

तइय तइयकर तरखडी तरखडीने

गळे में गणाभां

सांल भास

छेद काधुं

गलफडा अलर

परों बीगडां

पूँछ पुछडी

मटकलसे आसरे

मोटाई लडाई

चौदह चौद

नापा मया है भापवाभां आल्युं छे

मज मजु

भांकी गई है अंकाई छे

बर्षी यरणी

बसियां गरीओ

जनती है नखे छे

केकडां ईशु

प्रा० ३५

महाजय वांछीओ, सौंदर्य

करज देवुं

बुकाने को बुकवाने

संतुष्ट भोताभी

कोय दिवा सौभरीया

बुले पैदा

बीते बीता

बहुतेरा भइ

बार बार बारवार

पंजी से पंजओया

सुरबने लजा जोतरया भोताओ

कागज कागज

मज देवुं

किज कर भोते

मेद मेद

बर्षी भोती

મોંકના રહ્યા બસનો રહે।  
ગાઢા થા દાટયો હતો  
વેસકર જોધને  
લોટ આયા પાછો આવ્યો

વહીં ત્યાંજ  
ન સંભાલ સકા ન સંભાળી શક્યો।  
ગઢે હૈં દાટયા છે  
અપનેકો પોતાને

### પાઠ ૩૬

જ્ઞાન ખાણ  
મારી ભાગે  
ચમકીલા નેજસ્વી  
આગ દેવતા  
ગલ જાતા હૈ પીગળી જાય છે  
સોનાર મોના  
સુઢાને કે ખડીઆ ખારના  
ઑંચ ગરમી  
ધની ધનસન  
ગહને ધરથા

પત્ર પતરાં  
સીંચા જાતા હૈં ખેંચાય છે  
દવાઈયોમેં દવાઓમાં  
દામ પૈસા  
ચલન ચલણ  
મોહર મહોર  
અમરીકા અમેરિકા  
ઑફ્રીકા આફ્રિકા  
પાયા જાતા હૈ મળી આવે છે

### પાઠ ૩૭

મોલ લે સકતે ખરીદી શકતા  
કૌંસેકે કાંસાનાં  
પહિનતે હૈં પહરે છે  
અઠણી અડધે  
ચવમ્ની પાવ્લી

કુબ્રણી ખે આની  
માલદાર પૈસાદાર  
ચરતન વાસણુ  
ફૂંકી જાતી હૈ ભરમ કરવામાં  
આવે છે

पाठ ३८

इंगलिस्तान छिंझांड  
उडीसा ओरीसा  
खाने भाखे  
कलमें छलभे  
चाकू यथु

कुल्हाडी कुल्हाडी  
फावडा पावडे  
आदि वगेरे  
जान पडेगा जल्पाशे

पाठ ३९

सुहावना सुशोभित  
बादलों वादलो  
सामने साभा  
नाचने नाचवा  
फैला दी है इक्षवी छिंधी छे  
मानों जाले  
खिला है भीस्थुं छे  
गर्दन डोड  
कलंगी छलगी

परोंमें पीछांमां  
जडे हैं जड्या छे  
घमंड अभिमान  
टहलता इस्ते  
गाँवोंके गाभेना  
मैदानों मेदाने  
बसेरा आराम  
रजवाडोंमें रजवाडाओमां  
मोरछल भोरछल

पाठ ४०

आमके पेड आंभानां आड  
बने धाडां  
रजवाला रजवाण  
निल रियाँ भीसकेलीओ

ढेर दमले  
खटका भवान  
बजते ही वागतांन

कब आरे

डाल डाल आगे आगे

पात पात पाँडे पाँडे

तोतो पोपट

झुंड के झुंड टोले टोला

आम केरी

कुतर कुतर कर केतरी के-

वरीने

फलते हैं इले छे

बारहमासी आरमासी

इचता है इये छे, आवे छे

बौर भो'र

कूकी टुडुडी

सिधारी गध

बंबई मुअध

# હિંદી શિક્ષાવલી ભાગ ૧નો તરજુમો.

## પાઠ ૧

- (૧) સવારે ઊઠો અને ઊઠતાંજ ઇશ્વરનું નામ લો.
- (૨) માઆપની સેવા કરો.
- (૩) જીર્ણુ ના ખોલો.
- (૪) બધાં કામોને ઇશ્વર જીએ છે તેનાથી કંઈ છુપું નથી.
- (૫) જે કામ કરવા લાગો તે પુરું કર્યા વિના ન છોડો.
- (૬) વિદ્યાના બરાબર સંસારમાં કોઈ ધન નથી.
- (૭) બધાને પોતાના બાઈબાંડુના જેવા સમજો.
- (૮) દુઃખમાં કેવળ ઇશ્વરજ સાક્ષી છે.
- (૯) જે કામ તમને સોપાય તેને સાચાપથી કરો.
- (૧૦) વગર વિચારે કોઈ કામ ન કરો.

## પાઠ ૨

- (૧) કોઈથી (સાથે) તકરાર ન કરો.
- (૨) જે ઘરમાં તકરાર થાય છે તે ઘર જલ્દી નાશ પામે છે.
- (૩) બધાં કામોને ઇશ્વર જીએ છે; તેનાથી કંઈ છુપું નથી.
- (૪) દુઃખમાં ધીરજ રાખો.
- (૫) શરીર સાફ રાખો; સાફ (ચોક્ખા) છોકરાઓને બધા વહાલ કરે છે.
- (૬) કોઈને સતાવો નહિ, બધાનો તમારા જેવો જીવ છે.
- (૭) નઠારાં કામોથી કમાએલું ધન ઠરતું (ટકતું) નથી.

- (૮) જે ખીજઓને સુખી જોઈને બળે છે તે દુઃખી રહે છે.  
 (૯) નઠારા માણસોની સોખત કરવામાં તુકસાન છે, એ માટે તેમની સોખત કદી ન કરો.

### પાઠ ૩

- (૧) જે પોતાને ભરોસે કામ કરે છે તેને ધન્ય મદદ કરે છે.  
 (૨) જે તમારા પર ભરોસો કરે તેને કદી દગો ન દો.  
 (૩) નઠારી વાત કહેવાથી ખીજઓને દુઃખ થાય છે, એટલા માટે કોઈને નઠારો ન કહો.  
 (૪) નઠારા માણસોનો વિશ્વાસ ન કરો, નઠારો માણસ પોતાના મિત્રોને પણ દગો દે છે.  
 (૫) સાચો મિત્ર તે જ છે જે વખત આવે કામ આવે.  
 (૬) દુશ્મનની મીઠી મીઠી વાતોપર કદી વિશ્વાસ ન કરવો જોઈએ.  
 (૭) બધી જગ્યાએ ભણેલા ગણેલા માણસોને માન મળે છે. મૂર્ખને કોઈ માન આપતું નથી.  
 (૮) સારાં કામ કરવામાં વાર (ઢીલ) ન કરવી જોઈએ, કાણુ જાણુ પછી તે કામ તમારાથી થઈ શકે (થાય) કે નહિ.  
 (૯) બધાથી (સાથે) મીઠી વાતો બોલવી જોઈએ. કડવી વાત કોઈને ન કહો.  
 (૧૦) પાપ પ્રુણના સિવાય મુઝા પછી ખીજું કંઈ સાથે આવતું નથી.

### પાઠ ૪

- (૧) માખાપે તમારા માટે કેટલાં દુઃખ બિઠાબ્યાં (વેઠ્યાં) છે, એ વિચારીને તેમની સેવામાં હંમેશાં તૈયાર રહો. તમારું જીવ આહનાર તેમનાથી વધીને કોઈ નથી.

- (૨) અંદર અંદર લડાઇ ન કરો, કેમકે તેમાં પોતાનું પણ મન ઉદાસ થાય છે અને બીજાઓનો પણ જીવ બગડે છે. અંદર અંદરની લડાઈમાં દુઃખ જ દુઃખ છે.
- (૩) તાપમાં બહાર ન જાઓ, બહારથી આવીને તરતજ પાણી ન પી લો, થોડીવાર બેસીને, જ્યારે ઠંડા થઈ જાઓ, ત્યારે પોતાની તરસ ચોકખા પાણીથી ખુઝાવો (છિપાવો).
- (૪) રસ્તામાં જોઈ જાળવીને ચાલો, એવું ન થાય કે ઠોકર ખાઈને પડી જાઓ, કે કાંટો વાગી જાય કે કોઈ જીવજંતુ પગ તળે દબાવાથી કરડી ખાય.
- (૫) જે મનમાં આવ્યું તે વગર વિચારે કહી નાખવામાં કદી કદી મોઢું નુકસાન થઈ જાય છે, એટલા માટે વગર વિચારે કોઈ વાત મોંમાંથી ન કાઢો.
- (૬) કોઈ કામને જ્યારે તમે કરવા ચાહો ત્યારે સારી પેઠે વિચારી લો કે એનો છેડો (પરિણામ) શું આવશે, પોતાનો લાભ નુકસાન સમજીને તે કામમાં હાથ નાખો. (ધાલો)
- (૭) ગાળ કે કોઈ ખરાબ વાત બૂલીને પણ મોંમાંથી ન કાઢો, ગાળો દેવી (એ) નહારા છોકરાઓનું કામ છે. સારા છોકરાઓ એવી વાતોથી ગાઉ દૂર બાજે છે.

### પાઠ ૫

ચોકખા છોકરાઓને બધા ચાહે છે. મેલા મંદા છોકરાઓને બધા ધિક્કારે છે. શરીર મેલું રહેવાથી પરસેવો નીકળવો બંધ થઈ જાય છે. પરસેવો બંધ થઈ જવાથી બીજા કોઈ રોગ ન થયો તો આણસ આળસુ તો થઈ જાય છે. આળસુઓની શુદ્ધિ પણ મંદ



થઈ જાય છે અને નેમને ગરીબાઈ સતાવવા લાગે છે. એટલા માટે છોકરાઓ ! તમને ઘટે છે કે પોતાનું શરીર ચોકખું રાખો અને ઉજળાં કપડાં પહેવાં કરો.

### પાઠ ૬

સવારે ઊઠો અને ઊઠતાંજ ભગવાનનું નામ લો. જેણે તમારું સુખને માટે અનેક વસ્તુઓ બનાવી છે. સવારે ઊઠીને જે કામ કરાય છે તેમાં બહુ જીવ (મન) લાગે છે. ભણવાનું જેવું સવારે થાય છે તેવું ખીજા સમયે થઈ શકતું નથી. સવારે ઊઠીને જે યાદ કરાય છે તે બહુ જલ્દી યાદ થાય છે અને ઓછું ભૂલાય છે. સવારે ઊઠવાથી પ્રુદ્ધિ વધે છે અને શરીરમાં રોગ થતો નથી. સુરજ ઊગ્યા પછી સૂતા રહેવાથી સુસ્તી આવે છે. એટલા માટે છોકરાઓને ઘટે છે કે સવારે ઊઠવાની ટેવ પાડે.

### પાઠ ૭

જ્યાં સુધી બની શકે (ત્યાં સુધી) ચોકખું પાણી પીવું જોઈએ. ચોકખું પાણી પીવાથી રોગ ઓછા થાય છે. પાણી ઉકાળવાથી ચોકખું થઈ જાય છે. એક ત્રિપાઇ પર ચાર ઘડા ઉપર નીચે રાખીને ઉપરના ત્રણ ઘડાના તળીઆમાં કાણું કરી દેવામાં આવે પછી એકમાં કૌચલા, બીજામાં કાંકરા અને ત્રીજામાં રેતી ભરી દેવામાં આવે તો જે પાણી એ ત્રણ ઘડામાંથી ગળીને નીચેના ઘડામાં ભરાઈ જશે, તે પાણી બહુજ ચોકખું હશે. વરસાદનું પાણી પણ સાફ હોય છે, પણ પડતાં પડતાં તેમાં કેટલીક ચીજો મળી જાય છે. ઓગળેલા બરફનું પાણી પણ બહુ ચોકખું હોય છે.

## પાઠ ૮

હટ્ટા મસ્કરી વેરનું મૂળ છે, એટલા માટે હટ્ટા મસ્કરી કોઈની ન કરે. કોઈ તમારી મસ્કરી કરે કે તમારાથી વેર કરે તો તેને મન-માં ન લાવો; એમાંજ તમારું બહું યશ અને બધા લોક તમારી મોટાઇ (વખાણ) કરશે. જે માણસ યુરાધને બદલે બલાઈ કરે છે તે ઉત્તમ ગણાય છે; જે યુરાઈને બદલે યુરાઈ કરે છે તે મધ્યમ છે; અને જે બલાઈને બદલે યુરાઇ કરે છે તે નીચ કહેવાય છે.

## પાઠ ૯

જંગલમાં એક વાર શિકારી કુતરાઓએ એક બકરીનો પીછો લીધો (પુંઠ પકડી). બકરી નાસીને એક બાગમાં આડના એથામાં થઈ ગઈ અને કુતરા તેને દેખી ન શક્યા. થોડી વાર પછી બકરીએ ભૂખથી ગભરાઈને તે આડનાં પાંદડાં ચરી લીધાં. પાંદડાંનું આથું ન રહેવાથી કુતરાઓએ તેને જોઈ લીધી. બધા તેના પર તુટી પડ્યા અને તેને મારી નાખી. સત્ય છે, જે પોતાના બલાઇ કરનારની સાથે યુરાઇ કરે છે તેની એવીજ નઠારી દશા થાય છે.

## પાઠ ૧૦

વડ આ દેશમાં એક અનોખું જાડ છે. એની ડાળાઓમાંથી ધણી વડવાઈઓ નીચે લટકે છે. જ્યારે તે જમીન સુધી પહોંચે છે ત્યારે અંદર ધસી જઈને ચોટી જાય છે અને મૂળાઆં બની જાય છે. વડનું જાડ બહુ મોટું અને છાંયડાવાળું હોય છે. સૌથી મોટો વડ નર્મદા નદીને કિનારે બરૂચમાં છે. તે એટલો મોટો છે કે હજારો માણસો તેના છાંયડામાં સુખેથી રહી શકે છે.

## પાઠ ૧૧

એક દિવસ એક કાગડો તરસને લીધે ઊડતો ઊડતો પાણીના ઘડાની પાસે પહોંચ્યો. ઘડાનું મોં નાનું હતું અને પાણી તેમાં થોડું હતું. કાગડાએ કેટલીક વાર ચાંચ નાખીને (ધાલીને) પાણી પીવા ચાલું પણ તેની ચાચ એટલી મોટી ક્યાંથી કે પાણી સુધી પહોંચી શકે. છેવટે કાગડાએ તે ઘડામાં કાંકરી લાવી લાવીને નાખી. જેમ જેમ કાંકરી પડતી હતી (તેમ તેમ) પાણી ઉપર ચઢી આવતું હતું. થોડી વારમાં પાણી ઘડાના મોં (સુધી) પહોંચી ગયું અને કાગડા-એ સારી પેટે પોતાની તરસ છુઝાવી (છિપાવી). મહેનત નકામી જતી નથી.

## પાઠ ૧૨

આળસ કે સુસ્તીથી માણસનું જીવવું પણ ભારે ચર્ષ પડે છે. તેના દિવસ વીનાડયા વીતતા નથી. થોડાજ દિવસોમાં તે કશા કામનેા રહેતો નથી. મહેનત ન કરવાથી શરીરને જાત જાતના રોગ થઈ જાય છે. દુઃખ આળસુ માણસના છેવટ સમય સુધી પીડા ઊડતું નથી. આળસુ માણસને ગરીબાઈ ઘેરી લે છે. જે પાણી વહેતું રહે છે તે ચોકખું બની રહે છે, અને જે પાણી બાંધેલું રહે છે તે મેલું થઈ જાય છે અને તેના પર લીલ જામી જાય છે. એજ દશા ઉલ્લોગી અને આળસુ માણસની જણા. એટલા માટે ઉલ્લોગી માણસ આળ-જસને પોતાનો વેરી સમજીને પોતાની પાસે ફરકવા દેતો નથી.

## પાઠ ૧૩

એક નાના તળાવમાં દેડકાં રહેતાં હતાં. તેના કિનારે કેટલાક છોકરા રમતા હતા. તેમના મનમાં જે આવ્યું તો તળાવમાં ધડાધડ

પત્થર વરસાવવા લાગ્યા. બિચારાં દેડકાં ગભરાયાં, કોઇનું માથું ફૂટ્યું અને કોઇનો હાથ પગ તુટ્યો. એક દેડકાએ પાણીમાંથી માથું કાઢીને છોકરાઓને કરગરીને કહ્યું “ તમે અમારા ઉપર દયા કરો અને પત્થર ન ફેંકો.” એક છોકરાએ જવાબ આપ્યો. “ અમે તમારે માટે અમારી રમત છોડી દઇએ ? ” દેડકાએ કહ્યું “ તમારી આ રમતથી અમારાં માથાં ફૂટે છે અને અમે મરીએ છીએ.” છોકરાઓને ધટે છે કે એવી રમત ન રમે કે જેથી બીજાઓને દુઃખ થાય.

### પાઠ ૧૪

જે પોતાના મોટાઓ (વડીલો)નું કહેવું નથી માનતો અને જે ભણવામાં જીવ ચોરે છે; તે નકારો છોકરો કહેવાય છે. નિશાળના નિયમો ઉપર ધ્યાન આપતો નથી અને વખતસર નિશાળે જતો નથી; નિશાળે જવાનું બહાનું કાઢી ગલીઓમાં રમ્યા કૂચા કરે છે; જુડી વાતો બનાવે છે; પોતાના સાથીઓને છેડે છે; પોતે ભણતો નથી અને બીજાઓને ભણવા દેતો નથી. જ્યારે ગુરૂજી ભણાવે છે ત્યારે ધ્યાન આપતો નથી; મંત્રમાં વિચારતો નથી કે ભણવા ગણવાથી આપણા બાપ અને ગુરૂજી રાજી થશે. જે છોકરાઓ પોતાનું ભણ્ણ ચાહતા હોય તેમણે આ બધી વાતો છોડવી અને મોટાઓનું કહેવું માનવું જોઇએ.

### પાઠ ૧૫

બાઈ બાઈ એકજ માબાપનાં છોકરાં છે અને તેમણે એકજ માનું દૂધ પીધું છે. એટલા માટે બાઈ બાઈનું અંદર અંદરનું લડવું બહુજ ખરાબ છે. જે બાઈ અંદર અંદર સંપ રાખે છે તેમની મોટાઈ (વખાણ) થાય છે. એટલા માટે બાઈઓને ધટે છે કે એક બીજા સાથે

બહુ વહાલથી રહે. જે એવું કરે છે તેમનાં માઆપ રાજી રહે છે, કદી કદી જોવામાં આવ્યું છે કે સ્વભાવ મળતો ન આવવાને કારણે ભાઈ ભાઈ જુદા થઈ જાય છે, ભાઈ ભાઈ એક બીજાથી જુદા પણ થઈ જાય તોપણ તેમણે સમજવું જોઈએ કે એક બીજાની મદદ કર્યા કરે. એ રીતે અંદર અંદર સંપ રાખવાથી મોટાં મોટાં કામો પણ સહેજમાં થઈ જાય છે. પાડોશીઓ અને મિત્રોની સાથે પણ એવુંજ વર્તન કરવું (રાખવું) જોઈએ.

(૨)

એક માણસને ચાર છોકરા હતા. તેઓ હંમેશાં અંદર અંદર લડતા હતા. તેમનો બાપ તેમને બહુ સમજાવતો હતો, પણ તેઓ માનતા ન હતા. એક દિવસ બાપે પોતાના બધા છોકરાઓને એકઠા કર્યા અને તેમને એક સુતરની આંટી આપીને કહ્યું કે આ પર પોત-પોતાના બળની અજમાયશ કરો. દરેક છોકરાએ તેને તોડવા ચાહ્યું પણ તે કાપથી ન તૂટી. ત્યારે બાપે કહ્યું “એક એક તાર જુદો કરીને તોડો.” એ સાંભળતાંજ તેમણે તેને તોડીને ફેંકી દીધી. ડા-સાએ કહ્યું. “એજ રીતે જો તમે અંદર અંદર હળીમળીને રહેશો તો તમારું કોઈ કંઈ કરી શકશે નહિ, અને જો જુદા થઈ જશો તો જે ધારશે (તે) તમને નુકસાન પહોંચાડી શકશે.

પાઠ ૧૬

એક લાલચુ માણસ પાસે એક મરઘી હતી. તે હંમેશાં એક સોનાનું ઈંડું આપ્યા કરતી હતી. તે લાલચુએ એક દિવસ વિચાર્યું (કે) હું આ મરઘીનું પેટ ફાડી નાખું તો બધાં ઇંડાં મને એકજ વાર મળી જાય. એવું મનમાં ધારીને તેણે તે બિચારી મરઘીને મારી

નાખી; પણ છું એક પણ હાથ ન લાગ્યું. સત્ય છે, બહુ લાલચથી નુકસાન થાય છે.

(૨)

એક કુતરો મોંમાં રોટલી લઈ નદી પાર જતો હતો, પાણીમાં તેણે પોતાનો પડછાયો જોયો. કુતરો એવું સમજ્યો કે બીજો કુતરો મોંમાં રોટલી દબાવી જાય છે. તેના મનમાં લાલચ થઈ અને તેણે ધાર્યું કે હું તેની પાસેથી રોટલી પડાવી લઉં. એવું વિચારીને રોટલી પડાવવાને જેવું મોં ઉઘાડ્યું તેવો જે ટુકડો તેના મોંમાં હતો તે પણ નદીમાં પડીને વહી ગયો. ત્યારે કુતરો પસ્તાઈને કહેવા લાગ્યો. “ હાય હાય ! લાલચુઓની આવીજ દશા થાય છે.

પાઠ ૧૭

છોકરાઓ પોતાનો વખત લણવા ગણવામાં લગાડો. જેથી તમને છેવટે સુખ મળે. જો તમે એવું કરશો તો તમારાં માઆપ પણ તમને ચાહશે અને મોટા થયા પછી બધી જગ્યાએ તમારો આદર થશે. પોતાના માઆપની દોલત પર બૂલો નહિ. હંમેશાં કોઈનાં માઆપ જીવતાં રહેતાં નથી. એકને એક ( ગમે તે એક ) દિવસે મરીજ જાય છે. પછી તેમની દોલત પણ રહેશે નહિ તો તમે પસ્તાશો. પછી તમારાથી કંઈ પણ બની શકશે નહિ. એટલા માટે છોકરાઓ ! વિદ્યા શીખવામાં મન લગાડો. રમવા ફૂલવામાં ચિત્ત ન લગાડો. રમવામાં સમય નકામો જાય છે.

પાઠ ૧૮

છોકરાઓ ! વિદ્યાની બરાબર કોઈ ધન નથી, વિદ્યા જેની પાસે છે તેની પાસે બધુંજ છે. જુઓ માલમિલકતને ચોર ચોરી લઈ જાય છે, પણ વિદ્યાને ચોર પણ ચોરી શકતો નથી. રાજા કોઈને શિક્ષા

(આપવા) કરવા ચાહે છે તો તેનું ધન પડાવી લે છે, પણ વિદ્યાને તે પણ પડાવી શકતો નથી. બાઈ બાઈ જ્યારે જુદા થઈ જાય છે તો-ધરની બધી માલમિલકત અંદર અંદર વહેંચી લે છે, પણ વિદ્યામાં કોઈનો ભાગ વહેંચાતો નથી. કેટલુંએ ધન કોઈની પાસે કેમ ન હોય, (પણ) આપવાથી ધરીજ જાય છે અને છેવટે કંઈ રહેતું નથી, પરંતુ વિદ્યામાં સૌથી મોટો ગુણ એ છે કે આપવાથી વધતીજ જાય છે. રાજ્યોમાં પણ પૈસાદારનું તેટલું માન નથી થતું જેટલું વિદ્વાનોનું થાય છે. રાજ્યનું સન્માન તેનાજ રાજ્યમાં થાય છે પણ વિદ્વાન જ્યાં જાય છે ત્યાં તેનું સન્માન થાય છે. છોકરાઓ ! એટલા માટે તમને ઘટે છે કે ચિત્ત લગાડીને વિદ્યા શીખો જેથી જીવાની અને ધરડપણમાં સુખ પામો.

### પાઠ ૧૯

એક દિવસ એક કાગડો રોટલીનો કકડો ઉઠાવી લાગ્યો અને ઝાડ પર ખેસી ખાતો હતો. એટલામા એક લોકડી ત્યાં થઈને નીકળી. લોકડીએ કાગડાની તરફ જોઈને કહ્યું કે તમારી પાંખો બહુ સુંદર છે, અને તમારૂં ૧૫ આ વખતે બહુ સુંદર જણાય છે. જો ક્યાંક તમારી બોલી પણ સારી હોત અને તમે ગાઈ શકત તો તમારી બરાબર કોઈ પક્ષી ન હોત. એ સાંભળીને કાગડો બહુ રાજી થયો અને પોતાનું ગાળું સંભળાવવાને કા કા કરવા લાગ્યો. મોં ઉઘાડતાંજ રોટલી પડી ગઈ અને લોકડી તેને લઈ નાસી ગઈ. જેઓ ખોટી મોટાઈ ચાહે છે તેમની એજ દશા થાય છે.

### પાઠ ૨૦

એક ખેડૂતને ચાર છોકરા હતા. તેઓ બહુ રમતિઆળ હતા અને ખેતીના કામમાં જીવ લગાડતા નહોતા. જ્યારે ખેડૂત મરજી

પડ્યો ત્યારે તેણે પોતાના છોકરાઓને પોતાની પાસે બોલાવ્યા અને કહ્યું “ મારો માલ ખેતરમાં દાટ્યો છે. મારા મુઝા પછી તમે તેને ખોદીને અંદર અંદર વહેંચી લેજો. ” ખેડુત મરી ગયો પછી તેના છોકરાઓએ ધનની લાલચથી આખું ખેતર ઘણી ઉંડાઈ સુધી ખોદી નાખ્યું, પરંતુ ધન કંઈ પણ હાથ ન આવ્યું. ત્યારે નિરાશ થઈને તેમણે તે ખેતરને વાવી દીધું. ખેતર તો ખોદાએહુંજ હતું પાણી પણ વખતસર વરસ્યું, ખેતી સારી થઈ અને એજ ધન છોકરાઓએ ખેતરમાંથી મેળવ્યું. પછી તો તેમને ખેતીનો સ્વાદ પડી ગયો અને દર વરસે બહુ રૂપીઆ કમાવા લાગ્યા. જે મહેનત કરે છે તેજ લાભ (જિહાવે) મેળવે છે.

### પાઠ ૨૧

એક દિવસ એક ભમરીએ મધમાખને પૂછ્યું “ લોક તમને કેમ આટલા ચાહે છે અને મને કેમ ચાહતા નથી ? તમને પાળે છે અને મને મારે છે. તમારા માટે ઘર બનાવે છે અને મારા ઘરને આગ લગાડીને ઉગાડે છે. ” મધમાખે કહ્યું “ તમારાથી તેમને કંઈ પણ લાભ થતો નથી, તમે કેવળ ડાંખ મારો છો. એવી દશામાં તેઓ તમને કેમ ચાહવા લાગે. મને જુઓ કે આખો દિવસ મહેનત કરીને તેમને માટે મધ એકઠું કરું છું. મારી પેઠે તમે પણ તેમની સાથે બલાઈ કરો, તો તેઓ પણ તમારી સાથે બલાઈ કરશે તમે તેમની સાથે ધુરાઈ કરવી છોડી દો, તો તેઓ પણ તમને સતાવશે નહિ.

### પાઠ ૨૨

જુઠા માણસનો દરેક જગ્યાએ અનાદર (તિરસ્કાર) થાય છે જુઠો માણસ કદી સાચું પણ બોલે છે તો તેના સામને પણ બધા



લોક જુઠજ સમજે છે. રાતદિવસ તેને એજ વિચારવું પડે છે કે ક્યાંક માઈ જુઠ ખુલી ન જાય. પછી તેને એક જુઠ છુપાવવાને માટે સેંકડો બીજી જુઠી વાતો બનાવવી પડે છે. જુઠાને શિક્ષા ન મળી તોપણ તેની નિંદા તો થાય છેજ. એથી બચવાને માટે જુઠું કદી બોલવું ન જોઈએ. જો તમે સાચું બોલશો તો બધાના વહાલા બની રહેશો, અને બધા લોક તમારો વિશ્વાસ કરશે. સાચું બોલવાથી તમે જમતમાં મોટાઈ મેળવશો. એટલા માટે છોકરાઓ ! તમને ઘટે છે કે સદા સાચું બોલો અને જુઠનું નામ પણ ન લો.

### પાઠ ૨૩

બધી વસ્તુનો એક ને એક રંગ છે. સોનાનો રંગ પીળો છે, ચાંદીનો સફેદ, લોહનો કાળો, આકાશનો આસમાની (વાદળી), ધાસનો લીલો, અને લોહીનો લાલ. લાલ રંગ આંખોને બહુ ગુડસાન પહોંચાડે છે. લીલા રંગની તરફ કેટલીએ વાર સુધી જુઓ (પણ) આંખો થાકતી નથી. એટલાજ માટે ભગવાને લીલા રંગની વસ્તુઓ ધણા પ્રમાણમાં બનાવી છે. જુઓ પાણી વરસી ગયા પછી લીલોતરી કેવી સુંદર જણાય છે. વાદળી અને પીળો રંગ મળવાથી લીલો રંગ બને છે. વાદળી અને લાલ મળવાથી રીંગણીઓ (જાંબુડો) રંગ બની જાય છે.

### પાઠ ૨૪

દિશ્વિમાં એક દુકાનમાં દરજી કપડાં સીઆ કરતા હતા. તે દુકાનમાં એક બારી હતી. ત્યાંથી એક હાથી તળાવમાં પાણી પીવા જતો હતો. હાથી તે બારીમાં પેતાની સુંદર ધાલતો અને દરજી તેને સેટલી આપ્યા કરતા હતા. એક દિવસ તે હાથીએ તેને ટેવ પડી

હતી તે પ્રમાણે પોતાની સૂંઢ ખારીમાં ધાલી. એક દરજ્જાએ મસ્કરી-  
થી રોટલી આપવાને બદલે તેની સૂંઢમાં સેત્ર ઘોંચી દીધી. તે વખતે  
તો હાથી કંઈ પણ ન બોલ્યો, છાનોમાનો તળાવે ચાલ્યો ગયો. ત્યાંથી  
મેહુ પાણી પોતાની સૂંઢમાં ભરી લાવ્યો અને ખારીને રસ્તે દુકાનમાં  
નાખી (રેડી) દીધું. દુકાનમાં કાદવ જ કાદવ ચર્ધ ગયો અને બધાં  
કપડાં જે દરજ્જા સીવી રહ્યા હતા (તે) બગડી ગયાં.

### પાઠ ૨૫

છેકરાઓ ! વખતસર ખોરાક ખાધા કરો. બોજન એકજ સમયે  
ખાવાથી સારી રીતે પચે છે. વગર બૂખે ખાવાથી અનાજ પચતું  
નથી. બૂખથી ઓછું અથવા વધારે ખાવું (એ) અંતર્યાજ શરીર રોગી  
ચર્ધ જાય છે. જેમ ઓછું ખાવાથી માણસ દુબળો થઈ જાય છે  
તેવીજ રીતે બહુ ખાવાથી માંદો પડી જાય છે. ખાતાં ખાતાં બહુ  
પાણી પીવાથી બૂખ ઘટી જાય છે. એટલા માટે ખાધા પછી પાણી  
પીવું સાઈ છે. એકજ વાર દબાવીને ખાધાથી કેટલીક વાર થોડું થોડું  
ખાવું સાઈ છે.

### પાઠ ૨૬

ભગવાને આપણા પર બહુ ઉપકાર કર્યા છે. તેણે હવા, માટી,  
પાણી, તાપ આપણાજ માટે બનાવ્યાં છે. માટી વિના અનાજ  
ઉત્પન્ન થતુંજ નથી. હવા ન હોવાથી (મળવાથી) શ્વાસ છુટાવા માંડે  
છે પાણી વગર કોઈ જીવી શકતું નથી. તાપ વિના અનાજ અને ફળ  
પાકતાંજ નથી. તેમણે આપણને બોલવાને મોં, સુધવાને નાક, સાંભ-  
ળવાને કાન, કામ કરવાને હાથ અને ચાલવાને પગ આપ્યા છે. તેણે  
આપણને શુદ્ધિ આપી છે જેથી આપણે સાઈ ખેડું પારખી શકીએ.

છીએ. જેણે આપણા ઉપર એ ઉપકાર કર્યા છે તેને પ્રસન્ન રાખવો (એ) આપણો મુખ્ય ધર્મ છે. બલાઈ કરવાથી ધુરાઈથી બચવાથી તે પ્રસન્ન થાય છે. ભગવાને આપણા સાથે બલાઈ કરી છે. આપણને ઘટે છે કે આપણે પણ બીજાઓની સાથે બલાઈ કર્યાં કરીએ.

### પાઠ ૨૭

છોકરા નહારા નીકળવાથી માળાપને બહુ દુઃખ થાય છે. એજ વિચારમાં કદી કદી તેમનું આયુષ્ય પણ ધરી જાય છે. છોકરાઓ સારા નીકળે છે અને માળાપને પ્રસન્ન રાખે છે તો તેમનાં બધાં દુઃખ દૂર થઈ જાય છે. માળાપનો જીવ છોકરાંમાંજ લાગેલો રહે છે. જ્યારે તેમને દુઃખ થાય છે ત્યારે માળાપ પણ દુઃખી થાય છે અને જ્યારે તેઓ સુખી રહે છે ત્યારે માળાપ પણ સુખ પામે છે. બાપના વહાલથી માનું વહાલ વધારે હોય છે. સારા બાપ પોતાના છોકરાઓની સાથે નમ્રતાથી વર્તન કરે છે. તેઓ તેમને બહુ લાડ લડાવતા નથી કે પક્ષપાત કરતા નથી. તેઓ પહેલાં પોતાની ચક્ષાયલક્ષ્મી સુધારે છે અને સત્યને બધી બલાઈઓનું મૂળ સમજી પોતાનાં છોકરાંઓને સત્યના રસ્તા પર ચલાવે છે. છોકરાંઓને પણ પોતાનાજ જેવો સ્વભાવ શીખવે છે.

### પાઠ ૨૮

દિલ્હીમાં એક ગરીબ સ્ત્રીને ત્રણ છોકરા હતા. તેઓ બહુ સુશીલ હતા અને હંમેશાં નિશાળમાં જતા હતા. એક દિવસ કોઈએ તેને પૂછ્યું “તારી પાસે શું ધન છે?” તે સ્ત્રીએ કહ્યું “મારી પાસે ત્રણ રત્ન છે!” તેણે પૂછ્યું ક્યાં છે? એટલામાંજ તેના છોકરાઓ નિશાળમાંથી આવી ગયા. તે સ્ત્રીએ છોકરાઓની તરફ

જોષ કહ્યું, આજ મારાં રતન છે. સત્ય છે, મારાં છોકરાં રતનથી  
ઝોછાં હોતાં નથી.

### પાઠ ૨૯

ખજુરીનું ઝાડ સીધું ચાલીસ પચાસ હાથ સુધી લાંબું ચાલ્યું  
જાય છે. તેના મથાળે લાંબાં લાંબાં પાંદડાં છત્રીની પેઠે ફેલાઈ જાય  
છે. એનું ફળ મીઠું અને લાલ રંગનું હોય છે. ઝાડને મથાળે ફળોનાં  
પંદર વીસ ઝુમખાં લટકે છે. એક એક ઝુમખું દસ દસ શેર સુધી  
તોલમાં ઉતરે છે. એના ફળને અરખ લોક બહુ પ્રેમથી ખાય છે.  
ફળોને તડકામાં સુકવીને રાખે છે. સુકાએલાં ફળ બહુ દિવસ સુધી  
રહે છે. એને ફળોને તેઓ ભુકો બનાવી લે છે અને જ્યારે ક્યાંય  
બહાર નીકળે છે ત્યારે સાથે લઈ જાય છે. તેને પાણીમાં ઘોળીને  
પોતે પીએ છે અને પોતાના ઘોડાઓ અને કુતરાઓને પાય છે.  
ઠીલા ફળોને પોતાના ઊંટ અને ઘેટાંને આપે છે.

### પાઠ ૩૦

પર્વતમાટી અને પત્થરથી બન્યા છે. પર્વતોમાંથી ક્યાંક ક્યાંક  
પાણીનાં ઝરણો નીકળે છે. નદીઓની નિકાસ પણ એમાંથીજ થાય  
છે. પર્વતોમાં હિમાલય સૌથી ઉંચો છે, એટલા માટે પર્વતોનો રાજ  
કહેવાય છે. એ પર્વત હિંદુસ્તાનની ઉત્તરે છે. એનાં શિખરો અરધી  
ઠંકાએલાં રહે છે. એટલાજ માટે તેનું નામ હિમાલય ( હિમ=અરધ  
અને આલય=સ્થાન ) પડ્યું. ગંગાજ એમાંથીજ નીકળે છે. પર્વતો  
પર ઉંચાઈના કારણે શરદી બહુ હોય છે. ક્યાંક ક્યાંક એવા પણ  
પહાડ છે જેઓમાંથી આગ નીકળ્યા કરે છે. એવા પર્વતોને જ્વા-  
ળામુખી કહે છે. પંજાબના કાંગડા જિલ્લામાં પણ એક જ્વાળામુખી

પર્વત છે. ત્યાં જ્વાળાદેવીનું મંદિર છે. વરસાદના દિવસોમાં પહાડો પર બહુ શોભા થાય છે. પર્વતોથી ધણી લાભ છે. પર્વતોથી આપણને પથ્થર, ધાતુ અને લાકડાં મળે છે.

### પાઠ ૩૧

સુરજના નીકળતાં (ઊગતાં)જ રાતનો દિવસ થઈ જાય છે. બધી જમીન પર અંધારાનું અજવાળું થઈ જાય છે. સુરજ આપણને ગરમી પહોંચાડે છે. તેજ આપણા ખેતરમાં અનાજ અને ખાગમાં ફળોને પકવે છે. સવારમાં સુરજનાં કિરણો કેવાં સોહામણાં લાગે છે. સુરજના તેજથી દિવસે તારા છુપાઈ જાય છે. તેજ તારા અંધારી રાતે કેવા સોહામણા લાગે છે. દૂરથી તારા પાસે પાસે દેખાય છે પણ તેઓ એક બીજાથી બહુ દૂર છે. એમનામાંથી કોઈ કોઈ રાત દિવસ ફર્યા કરે છે. કોઈ જમ્યાએથી એકી વખતે ત્રણ હજારથી વધુ તારા કોઈ જોઈ શકતું નથી.

### પાઠ ૩૨

એક દિવસ સુરજ અને હવાને તકરાર થઈ કે બંનેમાં કોણુ બળવાન છે. એની તપાસને માટે અંદર અંદર એવું ઠંથું કે જે કોઈ મુસાફરનાં લુગડાં ઉતારાવી દે તેજ વધારે બળવાન સમજાય. એક દિવસ એક માણસ રસ્તે કપડું ઝોઢી ચાલ્યો જતો હતો. હવા જોરથી ચાલવા લાગી પણ જેમ જેમ હવાનું જોર વધતું ગયું તેમ તેમ તે પોતાના શરીરને કપડાં લપેટતો ગયો. હવાનું કંઈ ન ચાલ્યું. અને પછી સુરજે પોતાનું તેજ ફેલાવ્યું. સુરજની ગરમીથી તે મુસાફર પરગેવાથી બીજાઈ ગયો અને તેણે કપડાં ઉતારી ફેંકી દીધાં અને અંધારા

વાળા ઝાડની નીચે બેસી ગયો. હવાએ હાર માની અને મુરજને પોતાનાથી વધારે બળવાન માન્યો.

### પાઠ ૩૩

સાપ બહુ રંજના હોય છે. બધાથી કાળો સાપ વધારે ભયંકર હોય છે. સાપ ધણુંખડું જુનાં મકાનોનાં ખંડેરામાં અને જુનાં ઝાડોની બજોલોમાં રહે છે. શિઆળામાં તેઓ દરોમાં પેસી બેસી રહે છે, ગરમીમાં ઝાકળ ચાટવાને અને હવા ખાવાને નીકળે છે, વરસાદમાં દરોમાં પાણી ભરાઈ જવાને કારણે બહાર નીકળી આવે છે અને ધાસ તથા ઝાડીઓમાં રહેવા લાગે છે. સાપને પગ હોતા નથી પણ તે ગતિથી દોડી શકે છે. એની જીભ વચ્ચેથી ચિરાએલી હોય છે. એના તાળવામાં બે દાંત હોય છે અને એ દાંતોના મૂળમાં નાની નાની કાચળાઓ હોય છે જેમાં ઝેર ભરેલું રહે છે. કાળા સાપનું ઝેર બહુ તિક્ષણ હોય છે. તેના કરડેલા ઓછા બચે છે. બધાથી સારો ઉપાય એ છે કે જ્યાં સાપ કરડે ત્યાં બળતા કાચલાથી બાળી દેવું અથવા કાપીને ત્યાંનું લોહી કાઢી નાખવું. જનનાં અને રેશમી લુગડાંમાં એની કાંચળા રાખવાથી કીડા (કંસારી) લાગતા નથી.

### પાઠ ૩૪

માછલી ઇંડાંમાંથી પેદા થાય છે અને પાણીમાં રહે છે. તેઓ પાણીમાંથી નીકળતાંજ તરફડી તરફડીને મરી જાય છે. એના ગળામાં શ્વાસ લેવાને માટે બે કાણાં હોય છે. એજ કાણાંને ઝાલર કહે છે. માછલીઓને કાન હોતા નથી પણ તેઓ સાંભળી શકે છે. તેમને પગ હોતા નથી પણ તેઓ પાણીમાં ભીંગડાં અને પુછડીની મદદથી ચાલી શકે છે.

ઠેલ નામની એક મોટી માછલી હોય છે તે દુનીયાના બધા જાંતુઓથી મોટી હોય છે. તેની લંબાઈ આશરે પચાસ હાથ અને જડાઈ પણ એટલીજ હોય છે. પુછડીની લંબાઈ આઠ હાથ સુધી જેવામાં આવી છે. તેનું મોં ચૌદ હાથ સુધી માપવામાં આવ્યું છે. ઠેલ તોલમાં ચાર હજાર મણ સુધીની અંકાધ છે. તેનામાં ચરખી બહુ હોય છે અને એટલાજ માટે તેના શિકાર કરવામાં આવે છે. ચરખીની ખત્તીઓ બને છે. ઠેલ ઇડું આપતી નથી, બચ્ચું જણે છે અને તેને દૂધ પાય છે. તેને શ્વાસ લેવાને માટે બગવાને ફેફસું આપ્યું છે, એટલા માટે પાણીની બહાર માથું કાઢીને શ્વાસ લે છે. એને સમુદ્રમાં રહેવાના કારણે માછલી કહે છે.

### પાઠ ૩૫

એક ખેડુતને એક શાહુકારનું બહુ દેવું થઈ ગયું હતું. તેની પાસે દેવું ચુકાવવાને કંઈ પણ ન હતું. પરંતુ તેની પાસે એક કુતરો હતો, શાહુકાર તેનેજ લઈને સંતુળ થઈ ગયો. તેણે કુતરો શાહુકારને સોંપી દીધો. કેટલાક દિવસ વીત્યા પછી તે શાહુકારના ઘરમાં ચોર પેઠા અને તે નો બહુ માલ ઉઠાવી લઈ ગયા. કુતરો બહુ બસતો રહ્યો પણ કાષ્ટની આંખ ન ઉઘડી. ચોરોને જોઈને કુતરો તેમની પાછળ થયો અને જ્યાં ખેતરમાં ચોરોએ માલ દાટ્યો હતો તે જગ્યાને જોઈને પાછો આવ્યો. જ્યારે માલીક જાણ્યો (ત્યારે) કુતરો તે ખેતરની તરફ વારંવાર જવા અને આવવા લાગ્યો. એક વાર માલીક તેની પાછળ થયો. કુતરો ખેતરમાં પહોંચી જે જગ્યાએ માલ દાટ્યો હતો (ત્યાં) પંજથી માટી ખોતરવા લાગ્યો અને શાહુકારને તેનું ધન ખતાવી દીધું. શાહુકાર કુતરો પર બહુ રાજ થયો. તેણે એક કાચજ

પર 'તમારા કુતરાએ તમારું બધું દેવું ચુકવી દીધું' એવું લખીને કુતરાના ગળામાં બાંધ્યો અને તેને પહેલા માલીકની પાસે મોકલી દીધો. રસ્તામાં માલીક અને કુતરાનો ભેટો થઈ ગયો. માલીકે કુતરા શાહુકારને ત્યાંથી નાસી આવ્યો છે એવું સમજીને તેને ત્યાંજ તરવારથી મારી નાખ્યો. કુતરાના મરી ગયા પછી તેણે તે કાગળ તેના ગળામાં જોયો. પછી તો તે પોતાને સંભાળી શક્યો નહિ અને તેણે ત્યાંજ પોતાના પણ પ્રાણ આપી દીધા. અને એકજ જગ્યાએ દાટયા છે.

### પાઠ ૩૬

સોનું એક કીમતી ધાતુ છે. એ ખાણમાંથી નીકળે છે. અને બહુ ભારે અને ચળકતું હોય છે. દેવતા પર બહુ ગરમ કરવાથી પીગળી જાય છે. સોની સોનાને ખડીઆ ખાર સાથે ગરમ કરે છે. એથી સોનું થોડીજ ગરમીથી પીગળી જાય છે. પૈસાદાર લોક એનાં સારાં સારાં ધરેણાં બનાવરાવે છે. એના તાર જેવવામાં આવે છે અને પતરાં પણ બનાવવામાં આવે છે. સોનાનાં પતરાં દવાઓના કામમાં આવે છે. એના પૈસા બહુ પડે છે. વિલાયતમાં સોનાના સિંકાનું ચલણ છે. આપણા દેશમાં પણ એની મહોર બને છે. સોનું અમેરિકા અને આફ્રિકાના પશ્ચિમ ભાગમાં બહુ મળે છે. કયાંક કયાંક નદીઓની રેતીમાંથી પણ સોનું મળી આવે છે પણ તેને કાઢવામાં ખર્ચ બહુ થાય છે.

### પાઠ ૩૭

ચાંદી પણ કીમતી ધાતુ છે અને એ પણ સોનાની પેઠે ખાણમાંથી નીકળે છે, પણ એ સોનાના જેવી ભારે હોતી નથી અને રંગમાં સફેદ હોય છે. એનાં પણ ધરેણાં બનાવવામાં આવે છે. જે



સોનું ખરીદી શક્તા નથી તેઓ ચાંદીનાં ઘરેણાં બનાવરાવે છે. જેમને ચાંદી પણ નથી મળતી તેઓ કાંસાનાં પહેરે છે. હિંદુસ્તાનમાં ચાંદીના રૂપિયા, આઠઆની ( અડધો ), ચારઆની ( પાવલી ) અને બેઆની બને છે. પૈસાદાર લોક ખાવાને માટે ચાંદીનાં વાસણ પણ બનાવરાવે છે. ચાંદીના તાર પણ ખેંચાય છે અને એનાં પતરાં પણ બનાવવામાં આવે છે. ચાંદીની ભસ્મ કરવામાં આવે છે અને તે દવામાં કામ આવે છે. ચાંદી ખડીઆખાર સાથે જલ્દી પીગળે છે. ચાંદી થોડી ઘણી બધી જગ્યાએ મળી આવે છે. પણ અમેરિકામાં બહુ પ્રમાણમાં મળે છે.

### પાઠ ૩૮

લોહું પણ ખાણમાંથી નીકળે છે અને માટી તથા પથ્થરમાં મળેલું રહે છે. લોહાને ગરમી આપીને સાફ કરે છે. લોહું ઇંગ્લાંડમાં વધુ મળી આવે છે. હિંદુસ્તાનમાં પણ બર્મવાન, ઓરીસા અને કુમાઉમાં એની ખાણો છે. લોહાથી જેટલું કામ થાય તેટલું બીજી કોઈ ધાતુથી થતું નથી. લોહાની કલમે, ચપ્પુ, કુહાડી, પાવડા અને હથિયાર વગેરે બને છે. વિચાર કરી જુઓ તો જણાશે કે લોહું ન હોય તો આપણાં બધાં કામ બંધ પડી જાય. જે દેશમાં લોહાનું ચલણ નથી તે દેશમાં ઉન્નતિ થતી નથી. લોહાનું કામ પૈસાદાર અને ગરીબ બધાને પડે છે. એટલા માટે લોહું બધી ધાતુઓમાં મુખ્ય ગણાય છે.

### પાઠ ૩૯

મોર એક સોહામણું પક્ષી છે. જુઓ વાહજોની મર્જના સાંભળીને મોર સામેના ખેતરમાં નાચતા લાગ્યો છે, કેવું સોહામણું જણાય

છે ! પુછડી કેવી ગોળ ફેલાવી દીધી છે, જાણે સુરજમુખીનું ફૂલ ખીલ્યું છે. ડેક ઉપસેલી છે, માથા પર કલગી છે પીછાંમાં તારાજ તારા જડયા છે. તેને પોતાની સુંદરતાનું ધણું અભિમાન છે. તેનો જીવ ચાહે છે કે સોહામણું જંગલ હોય, જમીન પર લીલોતરી લલ-લલતી હોય અને હું ધીમો ધીમો ટહેલતો રહું. જ્યારે મન થયું કે એક બે વાર બોલી ઉઠયા, દૂર દૂર સુધી જંગલ ગાજવા લાગ્યું. મોર મંદિરો અને ગામોની પાસે રહે છે. સાંજ સવારે ખુલ્લાં મેદાનો અને ખેતરોમાં ફર્યા કરે છે. રાતે ઝાડો પર આરામ લે છે. રજવા-ઝાઓમાં તેને મારવા દેતા નથી. એની પુછડી અને પીછાંનાં મોરછલ બનાવે છે.

### પાઠ ૪૦

હોકરાઓ ! જુઓ આ બાગની અંદર કેવાં સુંદર આંખાનાં ઝાડ વાવેલાં છે. કેવાં ઘાડાં છે જાણે કાળી ઘટા છાંય હોય. રખવાળ કેરીઓ સાચવી રહી છે પણ ખીસકોલીઓ ક્યારે છોડે છે; ડાળે ડાળે અને પાંદડે પાંદડે ફરે છે. લો પોપટનાં ટોળે ટોળાં આવી પડ્યાં; કેરીઓ કોચી કોચીને ઢગલો કરી દીધો. અવાજ ચતાંજ બધાં પુરરર જીડી ગયા. કેરી એક સાલ તો સારી ફળે છે, પણ બીજી સાલ ઓછી, કોઈ કોઈ એક સાલ ફળે છે; બીજી સાલ ફળ આવતાં નથી. અને કોઈ કોઈ બારમાસી હોય છે. ગમે તો વૃદ્ધ હો કે જુવાન (પણ) કેરી બધાને બાવે છે. કેરી અને કાયલનો સાથ (સંવાદ) છે. ઝાડમાં મહોર આવ્યો અને કાયલ ટહુકી. કેરી થઇ ચુકી અને એ બીજા દેશોમાં સિધાવી. કેરી કેટલીક જાતની હોય છે. જેવી કે મુંબઈ, માલદા, સફેદા, લંગડા, ટિકારી, મોહનબોગ અને દેશી.

